ISBN NUMBER : 978-81-966404-5-3

# चुप्पियों का संवाद

संपादक – कुशाग्र जैन

# चुप्पियों का संवाद

काव्यसंग्रह

---

कुशाग्र जैन

पुस्तक का नाम: चुप्पियों का संवाद

संस्करण: प्रथम संस्करण प्रकाशन वर्ष: 2025

**ISBN: 978-81-966404-5-3**



**प्रकाशक:** शिवाग्र कलामंच फाउंडेशन, बांसवाड़ा, राजस्थान, भारत,

Kalaamanch000@gmail.com

**विशेष नोट:** यह पुस्तक विभिन्न कवियों की कविताओं का एक संपादित संग्रह है। संकलित कविताओं के चयन और प्रस्तुतीकरण में पूर्ण सावधानी बरती गई है। किसी भी त्रुटि या विसंगति के लिए सुझाव आमंत्रित हैं। आगामी अंकों में सावधानी रखी जाएगी।

# DEDICATION

यह संग्रह उन सभी मौन श्रोताओं को समर्पित है,

जो शब्दों से परे,

अनुभूतियों की गहराइयों में,

जीवन के अनकहे संवादों को सुनते और समझते हैं।

उन सभी रचनाकारों को,

जिन्होंने अपनी 'चुप्पियों' को स्वर दिया,

और अपनी लेखनी से

अदृश्य भावनाओं को दृश्य बनाया।

और उन सभी पाठकों को भी,

जो इस 'संवाद' का हिस्सा बनकर,

अपने भीतर की चुप्पियों से रूबरू होने का साहस करते हैं।

## रचना सूची

## भूमिका

"चुप्पियों का संवाद" - शीर्षक स्वयं में एक गहरी प्रतिध्वनि लिए हुए है। यह केवल शब्दों का संकलन नहीं, बल्कि उन अनकही भावनाओं, अव्यक्त विचारों और सूक्ष्म अनुभूतियों का एक कलात्मक संयोजन है, जो अक्सर हमारे जीवन की आपाधापी में मौन रह जाती हैं। यह संकलन उन चुप्पियों को स्वर देने का प्रयास है, जो कभी गहन चिंतन में, कभी सामाजिक विमर्श में, कभी निजी भावनाओं के उफान में और कभी प्रकृति के अलसाए आँचल में आकार लेती हैं।

प्रस्तुत पुस्तक विभिन्न रचनाकारों की प्रतिभा और दृष्टि का एक अनूठा संगम है। यहाँ प्रत्येक पृष्ठ पर आपको एक नया दृष्टिकोण मिलेगा, एक भिन्न विचार से परिचय होगा। अश्वनी राघव और रामेंदु की कविताओं में भावनाओं की गहनता और चिंतन की गहराई है, तो निर्मल जैन 'नीर' का 'विश्व जनसंख्या दिवस' जैसे विषय पर चिंतन सामाजिक सरोकारों को दर्शाता है। अन्नू राठौड़ रुद्रांजली 'आप कौनसे धर्म से आते हैं?' जैसे प्रश्न के माध्यम से पहचान और अस्तित्व पर विचार करती हैं, वहीं महेश काव्यप्रेमी 'अगर कविताओं से परिवर्तन होते' शीर्षक से कविता के सामर्थ्य पर प्रकाश डालते हैं।

इस संग्रह में डॉ. चंद्रेश कुमार छतलानी 'किताब' के माध्यम से ज्ञान और साहित्य की महत्ता को रेखांकित करते हैं, जबकि अशोक ताजावत 'सद्गुरु' के माध्यम से आध्यात्मिक गहराइयों को छूते हैं। संदीप शर्मा 'सरल' अपनी 'अलसाई रातें' और 'नवयौवना सी प्रकृति' में प्रकृति के विभिन्न रूपों और मानवीय संवेदनाओं का चित्रण करते हैं, वहीं सुनील चाष्टा 'सुरुप' 'नव सृजन का संदेश' देते हुए जीवन में आशा और नवोन्मेष की बात करते हैं। नूतन योगी

'क्या ऐसा दिन आएगा...?' के माध्यम से भविष्य के प्रति उम्मीद और जिज्ञासा व्यक्त करती हैं, और छैल बिहारी शर्मा 'जनप्रिय' अपनी रचना में जनसामान्य से जुड़ते हैं।

यह पुस्तक एक ऐसा मंच है जहाँ इन विविध आवाज़ों को एक साथ सुना जा सकता है। ये रचनाएँ हमें अपने भीतर झाँकने, आसपास के संसार को नए सिरे से देखने और उन मौन पलों को समझने के लिए प्रेरित करती हैं, जिनमें अक्सर जीवन के सबसे गहरे सत्य छिपे होते हैं। "चुप्पियों का संवाद" आपको एक ऐसी यात्रा पर ले जाएगा, जहाँ शब्द मौन को तोड़ेंगे नहीं, बल्कि उसे एक नई भाषा देंगे - एक ऐसी भाषा जो हृदय से हृदय तक सीधे संवाद स्थापित करती है।

आइए, इस संवाद का हिस्सा बनें और इन चुप्पियों में छिपे संदेशों को सुनें।

कुशाग्र जैन

16 जुलाई, 2025

# प्राक्कथन

साहित्य, मानवीय चेतना का वह शाश्वत प्रवाह है जो समय और परिस्थितियों की सीमाओं को लांघकर अनुभवों, विचारों और संवेदनाओं को पीढ़ी-दर-पीढ़ी प्रवाहित करता रहता है। इसी प्रवाह में कभी शब्द अपनी पूर्णता पाते हैं, तो कभी मौन की गहराई में ही सबसे प्रबल अर्थ छिपे होते हैं। "चुप्पियों का संवाद" एक ऐसा ही अभिनव साहित्यिक प्रयास है, जो शब्दों और मौन के इस अद्भुत संतुलन को पाठकों के समक्ष प्रस्तुत करता है।

यह संकलन मात्र कविताओं और आलेखों का संग्रह नहीं, अपितु उन अनकही कहानियों, अनसुनी पुकारों और अलिखित विचारों का एक संगम है जो हमारे समाज, संस्कृति और व्यक्तिगत अस्तित्व की गहराइयों में व्याप्त हैं। जीवन की भागदौड़ में, जहाँ हर कोई मुखर होने को आतुर है, वहाँ 'चुप्पियों का संवाद' उन पलों को खोजने का आह्वान करता है, जहाँ मौन स्वयं एक भाषा बन जाता है। यह उन गूढ़ संवादों को उजागर करता है जो शब्दों की परिधि से बाहर, भावनाओं के अंतर्लोक में घटित होते हैं।

विभिन्न रचनाकारों की कलम से निस्सृत यह कृति, अपने भीतर विचारों की एक विस्तृत श्रृंखला समेटे हुए है—सामाजिक चेतना से लेकर प्रकृति के सौंदर्य तक, दार्शनिक चिंतन से लेकर व्यक्तिगत अनुभूतियों तक। हर रचनाकार ने अपनी विशिष्ट शैली और संवेदना के साथ इस संवाद में अपना योगदान दिया है, जिससे यह संकलन न केवल विविधतापूर्ण बन गया है, बल्कि एक समेकित अनुभव भी प्रदान करता है। यह संग्रह हमें यह याद दिलाता है कि कभी-कभी सबसे गहरे अर्थ उन स्थानों पर पाए जाते हैं जहाँ शब्द समाप्त हो जाते हैं और भावनाएँ अपनी मौन अभिव्यक्ति पाती हैं।

हमें विश्वास है कि "चुप्पियों का संवाद" साहित्य प्रेमियों के लिए एक विचारोत्तेजक और हृदयस्पर्शी अनुभव होगा। यह उन्हें केवल पढ़ने के लिए नहीं, बल्कि रचने वाले मन की चुप्पियों को समझने और अपनी आंतरिक चुप्पियों से संवाद स्थापित करने के लिए भी प्रेरित करेगा। यह पुस्तक निश्चय ही भारतीय साहित्य जगत में एक महत्वपूर्ण पड़ाव सिद्ध होगी और पाठकों के मानस पटल पर अपनी गहरी छाप छोड़ेगी।

शुभकामनाओं सहित,

कलामंच

16 जुलाई, 2025

## रचनाकार परिचय

1. **अश्वनी राघव, रामेंदु** - नयी दिल्ली। वर्तमान पद: सलाहकार, दिल्ली राज्य एड्स नियंत्रण समिति। शिक्षा: समाजशास्त्र में स्नातकोत्तर, मार्गदर्शन और परामर्श में स्नातकोत्तर डिप्लोमा , इलेक्ट्रो होम्योपैथी में स्नातक।
   पुरस्कार और सम्मान: - आशुलिपि लेखन पुरस्कार 2007 (हिंदी अकादमी), सरस्वती सम्मान 2018 (अखिल भारतीय स्वतंत्र लेखक मंच), नवांकुर साहित्य सम्मान 2024 (नवांकुर साहित्य सभा, नयी दिल्ली)
   प्रकाशित कृतियाँ: साझा कविता संग्रह "काव्यांकुर", साझा कविता संग्रह "कविता के विभिन्न रंग",
   प्रकाशित रचनाएँ: प्रेरणा-अंशु, प्रयुक्ति, विश्वगुरु भारत, तरुण समाचार, पूर्वांचल समाचार, काव्य पीयूष, काव्य-कलश आदि पत्र-पत्रिकाओं और पोर्टल्स में रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं।
2. **निर्मल जैन 'नीर'** - ऋषभदेव/राजस्थान। हाइकु का लेखन व नियमित रूप से प्रकाशन। समाचार पत्र, मैग्जीन आदि मे धाराप्रवाह लेखन।
3. **अन्नू राठौड़ रुद्रांजली -** पिता का नाम - अजय सिंह जी राठौड़, पत्ता - राजसमंद। स्नातकोत्तर (गणित) , बी.एड। समाचार पत्र, मैग्जीन आदि मे धाराप्रवाह लेखन।
4. **महेश काव्यप्रेमी -** सलूंबर, राजस्थान। शिक्षा - एम.ए, बीएड। संप्रति - अध्यापन सेवा, स्वतंत्र लेखन।

5. **डॉ. चंद्रेश कुमार छ्तलानी -** समाचार पत्र, मैग्जीन आदि मे धाराप्रवाह लेखन।
6. **अशोक ताजावत -** समाचार पत्र, मैग्जीन आदि मे धाराप्रवाह लेखन।
7. **संदीप शर्मा सरल -** संदीप शर्मा सरल। देहरादून उत्तराखंड। स्नातकोत्तर, डी.एल,एड.सीटेट।। आत्मजः- प्रो सुरेंद्र कुमार शर्मा। माता जी श्रीमति सुषमा शर्मा। पेशाः- शिक्षक। पद भारः-सेक्रटरी" सोसाइटीज ऑफ विजडम एंड लर्निंग।" [SOWL], उपलब्धियाँः- सैकड़ो प्रमाण पत्र, लेखन व काव्य पाठ के एवज मे। सांझा संकलन मे योगदानः- सत्तर से अधिक पुस्तको मे काव्य सृजन। समाचार पत्र, मैग्जीन आदि मे धाराप्रवाह लेखन। एकल पुस्तके :- ,"संदीप स्वंय मे एक हस्ताक्षर" व "मैं और मेरा अक्स"। संपादकीय पुस्तके :- "कलम के दोस्त"। व "कलमबद्ध मैत्री"। अन्यः- अनेक सोशल साइट्स पर मंच संचालन, समीक्षक व काव्य पाठ का अनुभव लिए है। अपेक्षाएँः- "सीखना व पढ़ना।" आपका मानना है कि सीखना जीवन के किसी भी अंश से आरंभ किया जा सकता है। व अनुभव अपने से छोटे व बड़ो से किसी से भी लिया जा सकता है।
8. **सुनील चाष्टा सुरुप सलूम्बर -** पेशाः- शिक्षक। समाचार पत्र, मैग्जीन आदि मे धाराप्रवाह लेखन।
9. **नूतन योगी -** व्याख्याता राउमावि गढ़ी सवाईराम अलवर। पेशाः- शिक्षक। समाचार पत्र, मैग्जीन आदि मे धाराप्रवाह लेखन।
10. **छैल बिहारी शर्मा "जनप्रिय" -** समाचार पत्र, मैग्जीन आदि मे धाराप्रवाह लेखन। मंच संचालन, काव्य पाठ का अनुभव।

11. **कुशाग्र जैन** -. समाचार पत्र, मैग्जीन आदि मे धाराप्रवाह लेखन। कई पुस्तकों का लेखन व सम्पादन। बल साहित्य चित्री व देखूँ सरकारी प्रोजेक्ट के तहत 3 भाषाओं में प्रकाशित।

## कविता - अश्वनी राघव, रामेंदु

1)

**थोड़ा सा और जीवन**

कितना काम है करने को, कितने संघर्षों को पार पाना है,

कितनी नदियों और झीलों में बहना, तैरना और डूब जाना है।

कितना कुछ बचा है पढ़ने को, कुछ ही तो अभी बुद्ध को जाना है।

थोड़ी जिंदगी उनको और मिले, जो चाहते हैं कुछ और सीखना,

लिखना चाहते हैं, कुछ और कविताएं,

जिन्हें पूरे करने हैं, कुछ अधूरे काम

उन्हें मिले थोड़ा सा और जीवन।

2)

**जिनके पिता नहीं रहते**

जिनके पिता नहीं रहते,

नहीं रहती पूरी माँ भी।

कभी रहती है आधी माँ,

कभी रहता है आधा पिता,

कभी दोनों ही नहीं रहते।

बच्चे तलाशते हैं पुरानी माँ,

तलाशते हैं फिर से बचपन,

जो छूट गया है आधा कहीं।

3)

**जो कभी**

जब से गए दुनिया छोड़कर,

जीवन पहले जैसा नहीं रहा,

बस यादें बची हैं

हर्षोल्लास की,

जो कभी जीवन था।

## विश्व जनसंख्या दिवस - निर्मल जैन 'नीर'

बदलो सोच

बढ़ती जनसंख्या

धरा पे बोझ

●

रोज सताती

कल की चिंता हमें

खूब रूलाती

●

गम ही गम

घटते संसाधन

आँखे है नम

●

बुरा प्रभाव

शिक्षा,स्वास्थ्य,खाना

हुआ अभाव

●

भूल न जाओ

जनसंख्या अंकुश

खुशियाँ पाओ

## बताओ आप कौनसे धर्म से आते है? - अन्नू राठौड़ रुद्रांजली

गिरता है कोई अगर तो पहले हँसते हो, हाथ नही बढ़ाते हो,
हारता है कोई गर तो तुम मजाक उसका बनाते हो,
राग-द्वेष से भरकर तुम दुसरों की राहों में कांटे बिछाते हो,
खुद भी नही रहते खुश, ना खुशियाँ दूसरों की देख पाते हो ।
बताओ आप कौनसे धर्म से आते हों ?

ना बात ये लिखी गीता मे है, ना ही लिखा कुरान में हैं।
ना बाइबिल में है ऐसा कुछ, ना गुरू ग्रंथ साहिब की बखान में है।
छल-कपट और झूठ - फरेब को तो कहता हर धर्म गलत है।
लिखा यही वेदों मे है, बात यही पुराण मे हैं।
फिर भी करते हो फरेब कितने और मन कितनों का दुखाते हो।
बताओ आप कौनसे धर्म से आते हो ?

क्या इसलिए गुरू गोविंद जी ने अपनी संतान कुरबान किए थे,
पेगंबर मोहम्मद ने भी तो अमन और नेकी के फरमान दिए थे।
प्रेम और सद्भाव की खातिर ही तो येशू सूली पर चढ़े थे।
प्रभु श्री राम के चरित्र - मूल्यों से बढ़कर क्या कोई उसूल बड़े थे।
जब धर्म के नाम पर तुम आग सड़को पर लगाते हो, और आतंक देश मे मचाते हो।
तब हर धर्म के स्वर्णिम इतिहास को बोलो तुम कितनी बार झूठलाते हो।
बताओ आप कौनसे धर्म से आते हो ?

हाथों में पेन रहे पत्थर ना हो, मोहब्बत के बदले खंजर ना हो |
हम धर्म की अच्छाईयों को अपनाएं, धर्म के नाम पर कट्टर ना हो।
देश मे बलात्कार ना हो और दंगों में चीख-पुकार ना हो।
कोई भूख - गरीबी से ना मरे,और मदद के नाम पर वो Selfie वाला प्रचार ना हो।

स्वच्छ और सुरक्षित कैसे होगा देश, जब तक आत्म सुधार ना हो। बच्चो !
भविष्य हो तुम इस देश का आओ ! आज धर्म का सही मतलब सबको सीखलाते हैं।
आओ! आज एक सबसे बड़ा धर्म अपनाते हैं ।

तो इस होली मे रंग लगाने जसप्रीत और हरलीन के घर जाते हैं।
और सिवैयां ईद की अब्दुल और हमीद से मंगवाते है।
तो अगले लंगर की सेवा मे चलो गुरुद्वारे साथ हो आते हैं।
और क्रिसमस पर जेनिफ़र से कहकर केक थोड़ा बड़ा मंगवाते हैं।
हर धर्म की अच्छाईयों को सीख कर एक अच्छे इंसान बन जाते हैं। आओ !
आज सबसे बड़ा धर्म इंसानियत को अपनाते है।।

## अगर कविताओं से परिवर्तन होते - महेश काव्यप्रेमी

अगर कविताओं से परिवर्तन होते

तो

युद्ध नहीं होते,

गोलियाँ नहीं चलती,

बमों के धमाके नहीं होते,

लोग परस्पर गलें न काटते,

दगा-फरेब न करते दरमियाँ ,

झूठ,अन्याय,अत्याचार की

पराकाष्ठा न होती,

अविश्वास का दौर न होता,

अगर कविताओं से परिवर्तन होते।

लोगों में होता स्नेहिल सरोकार

करते दरमियाँ मधुर व्यवहार,

न होती चित्कारे सड़कों पर

खुशी-गमों में होती मददगारियां,

संगीतमय होता चहुँओर का परिवेश

खुशहाल होता देश और परदेश।

जिंदा होते ज़मीर, होती ईमानदारियां

नेक दिली होती, न होती दुश्वारियां।

जो होती कोई सामर्थ्यवान कविता,

कर सकती जो ऐसा आह्वान कविता।

कायम है यकीं मेरा अब तलक भी

गा रहा हूं पर सूखा है हलक भी,

होती नहीं लाचारी और बेबसी कहीं,

अगर कविताओं से परिवर्तन होते।

## किताब - डॉ. चंद्रेश कुमार छ्तलानी

कुछ पन्ने शिकायतों के
फट कर जाने कहां खो गए।

कुछ नखरों के अल्फाजों पर,
स्याही है बिखरी हुई।

नफरत के पन्नों में,
अक्षर मिल गए एक-दूसरे से,
अब पढ़ने में नहीं आते।

प्यार के पन्ने,
हमेशा से कोरे ही हैं।

दूसरों की बातों पर हामी भरते
पन्ने अब भी फड़फड़ा रहे हैं।

और शायद ऐसे ही,
फटी हुई जिल्द की ज़िंदगी की किताब,
यूं ही बंद हो जाती है।
रखी रह जाती है,
जहां न शेल्फ है, ना लाइब्रेरी।

## सद्गुरु - अशोक ताजावत

धन्य जीवन हुआ बङ्गुरु मिल गये।
कृष्ण भी जब शुरु संदीपन से जुड़े,
वो भगवान योगेश्वर बन गये।
राम भी ज्ञान पाने गुरु आश्रम रहे ।।
धन्य......................

गुरु समर्थ के शिवा भी शरण में गये,
देश-भक्ति का अनुदान वो पा गये।
धन्य जो शुरू की प्रतिमा से हुए,
एकलव्य जगत में नाम पा गये ।
धन्य.....................

नरेन्द्र जब गुरु से मुखातिब हुए,
विश्वबसुधा में भारत को चमका गये।
जो-जो भी गुरु की शरण में गये,
वो जगत में महामानव हो गये ।
धन्य.....................

इसलिये हे युवा तू सच जानले
महता गुरु की तू पहचान ले

तू भी उसी की शरण थाम ले,

अणु से विभु की दिशा बोध लें।

धन्य…………………..

## अलसाई रातें।। - संदीप शर्मा सरल

इक अलसाई रात जवां सी ,वजह कोई इक बात कहा की,करवटों मे ही सब रह गई,
होना था जिसे आसक्त आलिंगन मे, बाँहों की आगोश प्रियतम के ,जिस्त सिलवटों मे समेटे, सारी रात वह आप से ढह गई।।

किया तो हाँ पूर्ण श्रृंगार था कर्ण मे फूल, मेंहदी महावार, हाँ
पर क्या था कि गर्मी, जिस्म की ,सिमट अपने ही जिस्म मे रह गई।।

कर ही न सकी इक देह आकर्षित, सजकर बैठी सजनी समर्पित,
सावन के तीज त्योहार मे , बरसे बिन
बदरी वह रह गई।।

चूड़ी कंगना, खूब लिए थी,चोटी मे भी फूल गुंथे थी,काजल नयना भरमाने को,सौलह श्रृंगार रूप बिंधे थी,
पर क्या ही कहर आ बरपा, बदन तो आज भी तन को तरसा, रात सजी थी जो दुल्हन सी,क्यू विधवा सी वह सब रह गई।।

कौमार्य अंगडाई लिए था,छुअन को बेताब किए था,सिकुड़न तड़पन कह रही थी,मन केचुंल से बाहर बहे था,क्यूंकर ये बैचैनी फिर ये,प्रिया की अप्रिय सी,आप मे रह गई।।

कोई तो समझे पीड़ा को,दिल के पिघले अरमान जिया को,जो आसक्ति
सिफ्त होनी थी,विरहिन की,गठरी मे रह गई।।

वजह क्या कोई संताप कलह थी,या प्रियतम परदेस प्रिया थी,या फिर अपनी
जुबाँ निगोड़ी, जो आपे,विद्वेष लिए थी,
कुछ भी वजह सरल रही हो,रात नही वह गरल बही हो,ये तो थी सरस सी
रातें, जो अलसाई आप करे थी।।

## नवयौवना सी प्रकृति - संदीप शर्मा सरल

नवयौवना सी प्रकृति, अद्भुत श्रृंगार किए है,
लगाकर मेंहदी हाथों मे,हरियल हर द्वार किए है।।

बरबस बरसती बदरी, धरती से प्यार किए है,
प्रेम आल्हादित सा अंबर अतुलित उद्गार लिए है।।

देखो तो प्रसूता वनस्पति ,जो अंग उभार लिए है,
निभाती  दिखती रस्म हल्दी ,वाह क्या शिरोधार्य किए है।।

नदियां का कल कल देखा,उल्लास उत्साह लिए है,
उमड़ पड़ी सागर से मिलने,हिय प्यार उफान लिए है।।

पर्वत के शिखर को देखो,नम्रता बरकरार किए है,
करता चूर-चूर खुद को,अपना विस्तार दिए है।।

दरिया के तट को देखा,कैसे अंबार लिए है,
भर आई उसमे रवानी,अतुलित संसार किए है।।

देखा दूब का बढ़ना,कैसे स्वीकार किए है,
जैसे हार शिरोमणी रत्नाकर,सब अंलकार लिए है।।

पल्लवित उत्साहित खग नग,नभ से उदार हिय है,
हर अंग प्रसंग प्रकृति का,बस प्यार ही प्यार लिए है।।

कर रहा समर्पित खुद को,कितना विश्वास किए है,
प्रफुल्लित हर मन और तन अंग,जैसे पिया श्रृंगार किए है।।

बह जाओं न इस गरिमा मे,गौरव घर द्वार किए है,
नवयौवना सी प्रकृति, हाय क्या श्रृंगार किए है।।

## नव सृजन का संदेश देता जीवन में - सुनील चाष्टा सुरुप

चांद पर दाग तो देखा ही होगा
क्या सूर्य पर दाग देखा हैं कभी
साजिशें षड्यंत्र कितने भी रचे जाए
क्या सूरज पर दाग लगा पाया है कोई
अरे वो दिनकर तो स्वयं ही जलकर
सारे जग को है प्रकाशमान करता
क्या भास्कर पर धब्बा लगा पाओगे
वो भानू तो उदय और अस्त भी होता
तो रहता समान सा हर परिस्थिति में
नव ऊर्जा नव उमंग नव उम्मीद और
नव सृजन का संदेश देता जीवन में
काली विभावरी या काले बादल गर हो
तो बादलों की ओट से फिर से निकलता
स्वार्थपन से ऊपर उठकर ही देखो वो भी
निस्वार्थ सेवा भाव है रखता जीवन में
आसुरी शक्तियां गर एकत्रित भी हो तो
क्या सूर्य के तेज को रोक पाएगी भला
हैं गर उद्देश्य संकलित उसका भी तो
उजियारी राह भी सुफल ही होगी.

## क्या ऐसा दिन आएगा ...? - नूतन योगी

कहाँ गयी वो चंदन माटी,
कहाँ गये तपभूमि ग्राम।
कहाँ गयी बाला देवी सी,
कहाँ गए वो बच्चे-राम ।।

जहर उगलती नदियां सारी,
जो अमृत की वाहक थी।
देव तुल्य थे जंगल सारे,
ये देवभूमि जन नायक थी ।।

मैं सोचा करता हूँ फिर से,
क्या ऐसा दिन आयेगा।
विजय पताका गगन चूमेगी,
हृदय-क्षेत्र लहलायेगा।।

जगत गुरु के सिंहासन पर,
देश पदस्त हो पायेगा।
शहरी भारत पुनः लौटकर,
निर्मल ग्राम बनपायेगा ।।

अमियां बोरायेगी, लता भी,
पुष्पों से गदारायेगी।
भ्रमर करेंगे नित गुंजन,
कोकिल गीत सुनाएगी।।

और पपीहा भी अपने,
प्रियतम को पास बुलायेगा।
हो नतमस्तक अभ्र गगन में,
घटाटोप गहरायेगा ।।

हिमगिरि से निसृत नदियां,
नीर घड़ा छलकायेंगी।
छमछम बजती पायल पहने,
बाला पनघट जायेगी ।।

किसी गली के उस मुड़ाव पे,
बंशी कान्ह बजायेगा ।
और गोपिन की पदचापों से,'
मग झंकृत हो जायेगा ।।

होंगे नजारे इंद्रधनुष के,
तितली की रंगीन दुनियाँ।
कभी न भूखी सो पायेगी,
निर्धन की बेटी मुनिया।।

होंगे बेटों के हाथों में,
कागज कलम और दवात ।
और व्यापारी खुले हस्त से,
बाटेंगे धन की खैरात ।।

किसी राह पीपल की छाया,
कोई पथिक सुस्तायेगा।
कोई किसान बैठ मेंड पर,
गीत लोक के गायेगा ।।

हरियाली से पूरित होगी,
खेतों की संदिल क्यारी।
और बगुलों की श्वेत पंक्तियां,
चमकेगी न्यारी न्यारी।।

किसी झोपडी बैठ खाट पे,
तैल मलेगी बालों में।
कंगन खनकेंगे हाथों में,
शर्म लजेगी गालों में ।।

पथ निहारती आँखे चंचल,
पथरा कभी न पायेगी।
परदेशी बालम को विरही की,
याद कभी आएगी ।।

होगा कोलाहल गाँवो में,
चौपालों पर जमघट फिर से।
धूल उड़ाती कोमल कन्या,
स्वछंद घूमेगी फिर फिर से।

कोई निगाहें वहसी बनकर,
निगल सकेंगी ना उनको।
है अबोध और बन्द पड़े है,
पंख अभी तलक जिनको ।।

## जनप्रिय रचना - छैल बिहारी शर्मा जनप्रिय

सावन- भादों की,
काली घटनाएं,
रिमझिम बारिश,
नदी का किनारा,
झरनों का संगीत,
झील का ऊफान,
मनोहर हरियाली,
देखकर साजन,
जाना चाहते हो,
काव्य यात्रा प्रवास पर,
बना रहे हो योजना,
देव स्थान,वन भ्रमण की,
अपनों इष्ट मित्रों के साथ,
दाल- बाटी चूरमा की दावत उडाने की,
काव्य की रसधारा बहाने की,
पर मैं रोज देख रही हूं,
लगातार, रात दिन काम करते हुए,
रसोई से, बेडरूम से, छत से,
पर्दे व घूंघट की ओट से
काली घटाओं की ओट से,
तुम्हें योजना बनाते हुए,
कभी मुझे भी तो साथ लो साजन,
मेरी सौतन कविता के साथ,
मैं देखना चाहती हूं,
कैसे करते हो सवारी,
दो नावों में बैठकर,
आखिर मैं भी तो देती हूं,
प्रेरणा काव्य रचने की,
मुझे बिसरा कर क्या,
आनंद ले पाओगे,
वन भ्रमण का,
यात्रा प्रवास गोष्ठी का।।

# चुप्पियों का संवाद - कुशाग्र जैन

भीतर की आवांज

उठती है और होती है मौन.

हर नई बात पर

पूछती है कौन.

चुप्पी भी बोलती है भीतर-भीतर

संवाद के मध्य छाया रहता है मौन.

क्या मुख्य है

क्या गौण.

संवाद के मध्य चुप्पियाँ

या

चुप्पियों के दौरान भीतर का संवाद.

या फिर घोर चुप्पी

ता फिर अंतहीन संवाद चुप्पियों के अभाव के साथ.

आओं करे चुप्पियों का संवाद.